राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 650

दंगा

तिरंगा

KAKADE... KANTHEKAR

राज कॉमिक्स के उपलब्ध विशेषांक व सुपर विशेषांक

- नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव
- नागराज और बुगाकू (नागराज)
- फिर आया नागदंत (नागराज)
- नागराज और नगीना (नागराज)
- विजेता नागराज (नागराज)
- विसर्पी की शादी (नागराज)
- शाकूरा का चक्रव्यूह (नागराज)
- नागराज और पापराज (नागराज)
- नागराज का अंत (नागराज)
- जहर (नागराज)
- नागपाशा (नागराज)
- खजाना (नागराज)

- गोजो (गोजो)
- गोजो और दरिन्दे (गोजो)

- खतरनाक (डोगा)
- तिरंगा (डोगा)
- 786 (डोगा)

- रिवॉल्वर (परमाणु)
- रोडरोलर (परमाणु)
- हाहाकार (परमाणु)
- कहर (परमाणु)
- अब मरेगा परमाणु (परमाणु)
- टक्कर (परमाणु)

- एक कटोरा खून (थ्रिल)
- शैतान (थ्रिल)
- तहलका (थ्रिल)
- भन्जा (थ्रिल)

- भोकाल की तलवार (भोकाल)
- खतरों की धरती
- मायाजाल (भोकाल)
- शादी नहीं होगी (भोकाल)

- कबाड़नगर (फाइटर टोड्स)
- करोड़पति (फाइटर टोड्स)
- मूषकराज (फाइटर टोड्स)
- रैपस्टार (फाइटर टोड्स)

- भेड़िया (भेड़िया)
- कुल्फा (भेड़िया)
- ग्रहणो (भेड़िया)
- तिलंगे (भेड़िया)
- मैं हूं भेड़िया (भेड़िया)

- ग्रैंडमास्टर रोबो (ध्रुव)
- आवाज की तबाही (ध्रुव)
- खूनी खिलौने (ध्रुव)
- किरीगी का कहर (ध्रुव)
- चुम्बा का चक्रव्यूह (ध्रुव)
- डॉक्टर वायरस (ध्रुव)
- सामरी की ज्वाला (ध्रुव)
- आत्मा के चोर (ध्रुव)
- वैम्पायर (ध्रुव)
- सुप्रीमा (ध्रुव)
- मैंने मारा ध्रुव को (ध्रुव)
- हत्यारा कौन ? (ध्रुव)
- सर्कस (ध्रुव)
- हत्यारी राशियां (ध्रुव)
- मौत के चेहरे (ध्रुव)

- बांकेलाल और तिलिस्मदेव

इन सभी के साथ मुफ्त है आकर्षक उपहार।

सुपर विशेषांक

- प्रेत अंकल (प्रेत अंकल)
- भूतराजा (प्रेत अंकल)
- हऊआ (प्रेत अंकल)
- थोडांगा का प्रेत (प्रेत अंकल)
- फाइटर टोड्स (फाइटर टोड्स सीरीज)
- खून चोर (फाइटर टोड्स सीरीज)
- चैम्पियन (फाइटर टोड्स सीरीज)
- खलनायक (महानायक सीरीज)
- महानायक (महानायक सीरीज)

कोई भी छप्पन रुपये मूल्य की कॉमिक्सें आप हमसे घर बैठे डाक द्वारा मंगायें। साथ ही मुफ्त प्राप्त करें एक आकर्षक गिफ्ट ! कृप्या छप्पन रुपये का मनीआर्डर **राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी दिल्ली-84** *के पते पर भेजें और अपनी मनपसन्द की कॉमिक्सों के नाम मनीआर्डर फार्म के निचले हिस्से में अपने पूरे पते के साथ साफ-साफ लिखकर भेजें।*

इसी सैट के कॉमिक्स

- नागपाशा (नागराज का विशेषांक)
  इस विशेषांक के साथ एक ट्रेडिंग कार्ड मुफ्त।
- शिकार (परमाणु)
- यह षड्यंत्र है (भोकाल)
- मौत देगा योद्धा (योद्धा)
- दंगा (तिरंगा)
- कांव-कांव (क्रो सीरीज)

आगामी सैट के कॉमिक्स

- मौत के चेहरे (ध्रुव का विशेषांक)
  एक आकर्षक ट्रेडिंग कार्ड मुफ्त
- फंदेबाज (परमाणु)
- कोबरा (इंस्पेक्टर स्टील)
- जिद्दी (तिरंगा)
- मर गया अश्वराज (अश्वराज)
- हूऊऊ-6 (हूऊऊ सीरीज)

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीनः प्रकाशकः राजा पॉकेट बुक्स
330/1 बुराड़ी, दिल्ली-84 फोनः 7221410

दिल्ली में वितरक : नागराज नावल्टीज 313 दरीबा कलां,
दिल्ली-6 फोनः 3278397

अब ना खेली जायेगी पाप की होली। ना अब बहेगी खून की गंगा। सिर पर अपने कफन बांधकर, रक्षक बन आया है तिरंगा।

यह कहानी है कानून के उस रक्षक की जो फर्ज को अपनी जान से ज्यादा बढ़कर चाहता है। जिसके लिए फर्ज की राह में जान देना गौरव की बात है-

यह कहानी है उसकी, पाप और भ्रष्टाचार से भरी इस दुनिया में जिसका ईमान पहाड़ की मानिन्द अडिग है-

यह कहानी उसकी है जिसे हिन्दू-मुसलमान, सिख-ईसाई होने में नहीं बल्कि इस बात पर गर्व है कि वह भारतीय है-

यह कहानी है सारे जहां से अच्छे हिन्दुस्तान के बेटे की जिसका नाम है ...

तिरंगा

नोट : प्रस्तुत कॉमिक्स के सभी पात्र एवं घटनायें काल्पनिक हैं। किसी जिवित अथवा मृत से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। कॉमिक्स में दिल्ली का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिए किया गया है। कॉमिक्स का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है

© Raja Pocket Books

दिल्ली-

देशमें कानून, व्यवस्था और अमन-शान्ति को कायम रखने की योजनायें यहीं बनाई जाती हैं-

लेकिन इसी दिल्ली के किसी कोने में देश को आग में झोंक देने वाली योजनाएं भी परवान चढ़ती हैं-

तुम सिर्फ चार घण्टे के लिए आजाद हुये हो हब्शी ! इन चार घन्टों में तुम्हें अपने साथियों के साथ मिलकर भारतनगर कालोनी में वह आग लगानी है जिसमें पहले दिल्ली और फिर पूरा देश झुलस उठे और उसके बल पर हम अपनी राजनीति की रोटियों को आसानी से सेंक सकें !

इस काम को करने के लिए तुम्हें जितने हथियार और रुपयों की जरूरत पड़ेगी वह तुम्हें मिल जायेंगे।

आपके इशारे पर तो हब्शी पूरे हिन्दुस्तान में आग लगा सकता है। भारतनगर में आग लगाना भला क्या मुश्किल है। यह काम तो हब्शी 'यूं' कर डालेगा।

गुड ! जाओ अपना काम करो।

तुरन्त ही वहां से रवाना हुआ हब्शी।

इधर वह पलटा सामने हाथ बांधकर खड़े खद्दरधारियों की तरफ-

अपने गुट के सभी साथियों के साथ पूरे शहर में फैल जाओ और अफवाओं के घोड़ों को इतनी तेजी से दौड़ाओ कि कुछ ही देर में पूरा शहर जलता हुआ नजर आये ! समझे ?

हां भाईजी।

भारत नगर – जहां रहने वाले निम्न वर्ग के लोगों में हिन्दू-मुसलमानों की संख्या लगभग बराबर थी–

साम्प्रदायिकता की दृष्टि से यह इलाका अत्यंत संवेदन शील क्षेत्र की श्रेणी में आता है –

और ऐसा इसलिए क्योंकि यहां रहने वाले निवासियों को भारतवासी होने में नहीं बल्कि .... हिन्दू–

और ...

जय श्रीराम

मुसलमान होने पर गर्व है –

अल्लाह अकबर

लेकिन इन्हीं में जब आ मिलते हैं वे जो ना हिन्दू होते हैं और ना मुसलमान, जिनको मजहब से नहीं आतंक फैलाने से मतलब होता है –

क्या कह रहे हो भाई साहब?

मेरा कहा एक-एक शब्द सच है दोस्तो, मैंने खुद अपनी आंखों से देखा, उस मुसलमानी मुहल्ले में भारी मात्रा में असला पहुंच चुका है...

वे बाबरी मस्जिद का बदला लेने के लिए उस मुहल्ले में मौजूद अपने सत्यनारायण मन्दिर को 'उड़ाने' का प्लान बना रहे हैं!

सुनने वालों के खून में तो उबाल आना ही था –

अगर ऐसा है तो हमने भी चूड़ियां नहीं पहन रखी हैं। हमारे मुहल्ले में भी तो उनकी मस्जिद है। उसे हम सिर उठाये खड़े नहीं रहने देंगे!

हां-हां!

यह उस क्षेत्र का दृश्य था जहां हिन्दू आबादी अधिक थी–

और यह था उस इलाके का 'हाल' जहां मुस्लिम अधिक थे...

जिसे मेरी बातों पर यकीन ना हो तो हिन्दू मुहल्ले में जाकर अपनी आंखों से देख आये कि किस कदर वे लोग अपनी मस्जिद पर हमला करने की तैयारी में जुटे हुये हैं...

होश में आओ मेरे मुसलमान भाइयों और अल्लाह का घर बचाने के लिए कुछ करो।

जो कुछ ना कर सके उसे मुसलमान कहलाने का कोई हक नहीं!

उन शब्दों ने मानो सभी के जमीर को ललकारा था...

एक झटके से सभी की जलती हुई निगाहें पास ही स्थित उस मन्दिर की तरफ उठ गई थीं—

मैं चलूं मेरा काम तो हो गया!

"सच्चे मुसलमान" जो थे सभी -

अफवाह रूपी जाल फैलाने वाला वह शैतान वहां से खिसककर...

जल्दी ही अपने अन्य साथियों के पास जा पहुंचा-

पंडित के भेष में मुझे भला मन्दिर में घुसने से कौन रोकता। आराम से मन्दिर में घुसा और नारियल रूपी बम भगवान के चरणों में "चढ़ाकर" वापस लौट आया।

मुल्ला के रूप में मुझे मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए जाने से कौन रोकता। वहां मौजूद लोगों को भनक भी ना लगी कि मैं मस्जिद में नमाज पढ़ने नहीं, बम रखने आया हूं!

गुड। तुमने अपना काम बड़ी होशियारी से किया। अब मुझे अपना काम करना है और मेरा काम है अपने अंगूठे को सिर्फ थोड़ी सी जहमत देना।

रिमोट का बटन दबा...

...और हुए दो धमाके...

धड़ाम

जो मन्दिर - मस्जिद में नहीं...

..लोगों के दिलों में हुये थे-

यह मुसलमानों का काम है!

हिन्दुओं के सिवा इस काम को कोई कर ही नहीं सकता!

धार्मिक उन्माद ऐसा बढ़ा कि...

दोनों समुदाय के लोग सड़कों पर निकल आये-

दर्दनाक चीख-पुकारों से भारतनगर का चप्पा-चप्पा गूँज उठा-

मारो!ऽऽ

मारो!ऽऽ

और यह चीख-पुकार इस बात की द्योतक थी कि भड़क चुका था—

दंगा

लेखक : हनीफ अजहर
सम्पादक : मनीष गुप्ता
चित्रांकन : गोपाल / राहुल

संजय गुप्ता की पेशकश।

भारतनगर पुलिस स्टेशन में—

कुछ कीजिए ! कुछ कीजिये सर, पूरा भारतनगर दहकता जा रहा है। अगर जल्द ही दंगे पर काबू ना पाया गया तो यह आग ना जाने किस-किस को निगल जायेगी !

मैं हेडक्वार्टर से सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश कर रहा हूं हवलदार रामनाथ, लेकिन लगता है वायरलेस में कोई गड़बड़ी आ गई है !

ओह! तो फिर आप थाने में मौजूद स्टाफ को आदेश दे दीजिए सर कि वे मेरे साथ दंगा रोकने का प्रयास करें !

हां, ये हो सकता है। तुम थाने के सभी पुलिसकर्मियों को लेकर दंगा रुकवाने पहुंचो !

ओ.के. सर।

अपने अफिसर को सेल्यूट करके, तेजी से बाहर को लपका हवलदार रामनाथ।

जब वह अन्य पुलिसकर्मियों के पास पहुंचा तो—

तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है रामनाथ ! दंगा जिस रूप में भड़का हुआ है उसके बीच में कूदना सीधा मौत के मुंह में छलांग लगाने के समान है !

इसलिए दंगे को रोकने का विचार त्याग दे और हमारे साथ बैठकर ताश खेल।

क्रोध से सूखे पत्ते की तरह ही तो कांप उठा हवलदार रामनाथ—

तुम सब कायर हो, बेईमान हो। अपने फर्ज से मुंह मोड़कर दुनिया को धोखा दे रहे हो। लेकिन मैं तुम जैसा नहीं... सुना तुमने, मैं तुम जैसा नहीं.. मैं इस पवित्र वर्दी की लाज रखूंगा...

हा-हा-हा! बेचारा फर्ज का मारा !

मैं अकेला ही जाकर दंगा रोकूंगा।

नया-नया बदली होकर आया है ना इसलिए इस थाने के रूल नहीं जानता। अगर जानता होता तो फर्ज नाम के गीत ना अलापता !

अपने फर्ज को निभाने के लिए अपनी जान को हथेली पर रख दंगाग्रस्त इलाके में आ पहुंचा वह सच्चा सिपाही–

रुक जाओ। मैं कहता हूं रुक जाओ। बन्द करो ये इन्सानी लहू को पानी की तरह सड़कों पर बहाना। बन्द करो...

बन्द करो यह शैतानियत।

धड़

शैतानियत के उस रूप को देखकर तो हवलदार रामनाथ का सम्पूर्ण अस्तित्व ही कांप उठा–

उफ! नहीं! वे शैतान दो मासूम बच्चों पर पेट्रोल छिड़ककर उनमें आग लगाने जा रहे हैं।

नहीं! अंकल प्लीज़ अंकल, नहीं!

मेरे जीते-जी हरगिज नहीं हो पायेगा ऐसा!

अपने पूरे जीवन की सबसे तेज दौड़ लगाकर...

उन शैतानों से जा टकराया हवलदार रामनाथ–

हटो हैवानो!

धड़ाक

पुलसिया! मार डालो साले को!

आहऽऽऽ

तुम जैसे पागल कुत्तों से कैसे निपटा जाता है ये मैं...

आहऽऽऽ

क्रांच

झटक

...अच्छी तरह जानता हूं।

दंगाई के हाथ से गिरी तलवार को लपककर उठाया रामनाथ ने और–

भागो

भागो

आओ शैतानो! मैं तुम्हें बताता हूं कि खून जब नसों के बंधनों को तोड़कर आजाद होता है तो कितना दर्द होता है!

दूसरों की जान लेने वालों के दिलों में इतनी हिम्मत कहां थी कि वे अपनी जान को मुसीबत में देख खड़े रह जाते।

रामनाथ ने दोनों भयभीत बच्चों को अपने अंग से चिपटा लिया तो–

ये क्या हो रहा है बाबा! सभी मुक-दूसरे को क्यों मार रहे हैं?

हिन्दू और मुसलमानों में दंगे हो गये हैं बेटा!

ये हिन्दू और मुसलमान कौन होते हैं बाबा? मास्टरजी तो कहते हैं कि हम सब भारतवासी हैं?

बच्चे के सवाल ने झुरझुरी-सी दौड़ा दी हवलदार रामनाथ के जिस्म में। चीख ही पड़ा वह–

गलत... तुम्हारे मास्टरजी गलत कहते हैं मेरे बच्चे... वे शायद जानते नहीं कि हम सब भारतवासी नहीं, हममें से कोई हिन्दू है, कोई मुसलमान, कोई सिक्ख और कोई ईसाई है। हमारा भारत से कोई सम्बंध नहीं, अगर सम्बंध होता तो क्या हम यूं खून बहाते, क्या हम ये आग लगाते? क्या हम जाति-धर्म के नाम पर शैतान बनते?

शैतान! ये शैतान वही होता है ना बाबा, जिसे हम कॉमिक्सों और कहानियों में देखते-पढ़ते हैं!

हां... वही... मेरे बच्चे! उसी शैतान की बात कर रहा हूं मैं, लेकिन वह शैतान आज सिर्फ कॉमिक्सों और किस्से... कहानियों में ही नहीं रह गया है, आज वह सड़कों पर उतर आया है...

...जाति-धर्म और भाषा के लिये लड़ते इन इन्सानों के रूप में!

...अरे!

अचानक बिच्छू काटे-सा चौंका हवलदार रामनाथ...

...और उसके चौंकने का कारण था वह चेहरा—

हब्शी!

हब्शी उस वैन में कैसे? ...उसे तो हवालात में बन्द होना चाहिए था। मैंने उसे अपने हाथों से वहां बन्द किया था। क्या रहस्य है ये मुझे थाने में जाकर पता करना चाहिए...

दोनों बच्चों को मुक घर में सुरक्षित छोड़कर...

...जब वह पुलिस स्टेशन पहुंचा —

हब्शी यहां! साहब के साथ!

आओ, आओ, हवलदार रामनाथ! लगता है चौक पर मुझे देखने के बाद वहां से भागते हुए सीधा यहीं आ रहे हो। पुराना जिस्म है थक गया होगा। लो ये ड्रिंक्स ले लो!

रामनाथ को सारा माजरा समझने में पुक पल भी तो नहीं लगा —

इसका मतलब हब्शी को जान-बूझकर हवालात से रिहा किया गया था ताकि वे खुले आम दंगा भड़का सके। लेकिन कोई इसे पहचानकर इस पर दंगा भड़काने का इल्जाम लगाये तो यह दलील दी जा सके कि हब्शी तो हवालात में बन्द था...।

काफी समझदार हो रामनाथ! सब कुछ पुक पल में ही समझ जाते हो, लेकिन यह बात दूसरों को मत समझाना क्योंकि इससे तुम्हें कुछ नहीं मिलने वाला...

...जबकि 'दबाने' में लाखों का फायदा है। ...पुक लाख ठीक रहेगा ना तुम्हारे लिपु!

इसी के साथ भड़क उठा हवलदार रामनाथ —

रिश्वत की हड्डी मेरे सामने मत फेंक, क्योंकि इस हड्डी को वे कुत्ते खाते हैं जो अपना जमीर, अपना ईमान, और यहां तक कि अपने देश तक को बेचने के लिपु तैयार हो जाते हैं और उन कुत्तों की नस्ल में तुम भी आते हो एस. एच. ओ. पालकुमार...

लेकिन मैं तुम जैसा नहीं। मैं बापू, पटेल, भगतसिंह, बोस के पदचिन्हों पर चलने वाले उन इन्सानों में से हूं जो फर्ज के लिए अपनी जान कुरबान कर सकते हैं और प्रेस को तू एक लाख में तो क्या लाखों-लाख में भी नहीं खरीद सकता...

धड़ाक

...समझे कमीने!

नीचे गिरे प्रस. प्रध. ओ. पालकुमार पर बाज सा झपटा रामनाथ...

तुझ जैसे कुत्तों को यह पवित्र वर्दी पहनने का कोई हक नहीं.. आहहहहह!

साले! साहब पर हाथ उठाता है।

पाड़ा से दोहरा हुआ रामनाथ अचंभित रह गया—

त...तुम सब भी...!

हां, हम सब भी साहब के साथ हैं।

लेकिन ये बात जानकर तू जिन्दा तो रह नहीं पायेगा!

धांय

मारो और मारो साले को मार डालो!

कानून के घर में ही कानून के एक रक्षवाले को कानून के रक्षक ही मार देने पर उतारू थे--

आहऽऽऽ

कुछ पलों में ही -

अभी ये मरा नहीं है साहब ! इसे खत्म कर दें, वरना ये हमारे बारे में सारी दुनिया को बताता फिरेगा !!!

नहीं, नहीं, इसे थाने में मारना ठीक नहीं !

धड़ाम

तो फिर मुझे एक मौका दो मैं इसे किसी को कुछ बताने लायक नहीं छोड़ूंगा !

हिंसक ढंग से आगे बढ़े हब्शी ने...

...दरिन्दगी और खूंखारता की सभी सीमाएं पार कर दी -

अब ये ना कभी बोल पायेगा...

...और ना लिख पायेगा।

जल बिन मछली की भांति छटपटाते...

...हवलदार रामनाथ का शरीर अब निश्चल पड़ा था...

इसे ले जाकर दंगाग्रस्त इलाके में फेंक दो। कल के अखबार में यह खबर छपेगी कि बहुत से लोगों के साथ एक हवलदार भी दंगाईयों की चपेट में आ गया...

लेकिन ठहरो, इसे ले जाने से पहले हब्शी को हवालात में बन्द कर दो। क्योंकि अब मैं हेडक्वार्टर सूचना भेजकर दंगाग्रस्त क्षेत्र में पी. पु. सी. भेजने को कहने जा रहा हूं !

दंगो में मरे इन्सानों की लाशों के बीच फेंक दिया गया हवलदार रामनाथ का शरीर...

...लावारिसों की तरह--

पी.ए.सी. आ जाने के बाद भी ना रुके दंगे--

...ना थमा इन्सानियत का रोना...

...ना थमा शैतानियत का नंगा नाच--

...ना ठहरी तबाही...

...ना खत्म हुई वह दहशत। हैवानियत! दरिन्दगी...

समाचार

भारतनगर में कल शाम भड़के दंगों पर पुलिस और पी.ए.सी. के हस्तक्षेप के बाद भी काबू नहीं पाया जा सका है। रात कर्फ्यू लगा देने के बावजूद भी दंगाई दंगा करने से नहीं चूके। अब तक २०० लोगों के मारे जाने और सैकड़ों के घायल हो जाने की खबर है। प्रधान मंत्री ने स्थिति का जायजा लेते हुए दंगाईयों से कड़ाई से निबटने और उन्हें देखते ही गोली मार देने का आदेश दिया है। विपक्षी नेताओं ने कहा है कि...

...कि सरकार इन दंगों के प्रति उदासीन है। उन्होंने कहा है कि अगर सरकार इन दंगों को रोकने के लिए कोई उचित कदम नहीं उठायेगी तो इन दंगों को कोन रोकेगा...

मैं!... मैं रोकूंगा इस दहशत के तूफान को...

मैं रोकूंगा इस शैतानियत की आंधी को!

मैं रोकूंगा हैवानियत के इस नंगे नाच को!

दंगाग्रस्त इलाके में –

उधर उस बड़ी हवेली में बहुत से आदमी मौजूद हैं, अगर हम किसी तरह उसे उड़ाने में सफल हो जायें तो एक झटके में ही ले सकते हैं अपने सैकड़ों भाइयों का बदला।

लेकिन उस हवेली को उड़ाने के लिए वहां तक पहुंचा कैसे जाये, बीच में तो पुलिस खड़ी है।

ठहरो मैं करता हूं इसका इन्तजाम।

ये लठ्ठा मैंने इस लम्बे पलीते के गुच्छे में आग।

पलीता सुलग उठा –

और फिर –

चल पड़ा मौत का वाहन अपने लक्ष्य की तरफ –

... जिसने भी देखा उसके होश फाख्ता हो गए –

बमों से भरी ठेली इधर ही आ रही है। किसी भी पल उसमें धमाका हो सकता है। भागो।

हवेली के सामने खड़े पुलिसकर्मियों को मौत के भय ने एक पल में ही तितर-बितर कर दिया –

और ऐसा होता भी क्यों ना। किसका समय पूरा हुआ था जो उस साक्षात मौत के सामने आता –

रास्ता एकदम साफ था –

अब तो ठेली को हवेली तक पहुंचना ही था... अब तो वह धमाका होना ही था...

...जिसमें हवेली और उसमें मौजूद सैकड़ों इन्सानों के परखच्चे उड़ जाने थे –

और उस समय तो ठेली और हवेली के बीच थोड़ा ही फासला रह गया था –

बोल आह!
बोल फिर से आह!
बोल बचाओ!
बोल इऽऽऽऽ
बोल मरा!
बोल नहीं!
आह!
आह!
बचाओ!
इऽऽऽऽ
मरा!
नहीं!

राजा कॉमिक्स में सुपर कॉमेडियन बांकेलाल का हंसाता, गुदगुदाता कॉमिक्स

राजा है बांकेलाल

०००कि तभी उनकी आंखें फटने को उतारू हो गईं—

क्योंकि०००

आंधी की तरह सरसराती आई वह ढाल ठेली के पहियों को शहीद करती चली गई थी—

इसी के साथ शहीद हो गई ठेली भी—

लेकिन सही-सलामत थे अभी वे बम जो ठेली पर रखे थे—

और जो किसी भी पल फट सकते थे—

तभी मौत से खेलने आ पहुंचा वह—

लेकिन एक पल का सौ वां हिस्सा भी शायद उसके लिए बहुत था जो बमों के उस गुच्छे को थामकर किसी छलावे की भांति कुएं की तरफ उछल गया था०००

भला वह मौत से खेलना नहीं तो और क्या था। उन बमों के गुच्छे को हाथों में उठाना जिनके जलते हुए पलीते एक क्षण के सौ वें हिस्से से पहले ही बम में भरे बारूद तक पहुंचने वाले थे—

शायद उसका मकसद बमों को पानी में फेंककर बेकार करना था०००

लेकिन वह अपने मकसद में सफल हो जाता उससे पहले ही –

धड़ाम

धड़ाम

धड़ाम

दंगा

जो इस दंगे की आग को भड़काने वालों के लिए विनाश का पैगाम बनकर आया है!

आहऽऽऽ

धक्क

धक्क

धक्क

धक्क

आह

धक्क

धक्क

...फिर कुछ करने लायक ना रहे दंगाई। पी.ए.सी. के जवानों ने उन्हें तुरन्त ही गिरफ्तार कर लिया...

...जिसने भागने की कोशिश की वह गोली का शिकार बना...

धांय

धांय

आह

आह

फिरकनी सी घूमी उस ढाल की चोटों को सहकर....

देखते ही देखते दंगाई कैदी बन गये थे और उस मुहल्ले से दंगे का आतंक समाप्त हो चुका था—

यह सब उस रहनुमा तिरंगा की वजह से हुआ कहां गया वह ?

ये रहा ! ये रहा तिरंगा !

वहां तिरंगा झण्डा था...

...और तिरंगा—

दूसरे मुहल्ले में—

हा-हा-हा। हमारे मुहल्ले में तुझे बचाने कोई इन्सान क्या तेरा भगवान भी नहीं आयेगा। हा-हा-हा।

बचाओ

बचाओ

दूसरे ही क्षण छूट पड़ी उस जालिम के हाथ से वह तलवार—

यह तलवार तेरी आत्मा को हमसे बचाकर अल्लाह के पास ले जायेगी।

इसी तरह भारतनगर के हर मुहल्ले से दंगे की आग बुझानी है मुझे !

नहीं!

उस तलवार के रूप में मौत उस भागते हुए व्यक्ति के एकदम नजदीक पहुंच गई-

तभी-

धनाक

सनसनाती उस ढाल ने तलवार का लक्ष्य बदल दिया-

और उन दोनों हाथों ने थाम लिया उस व्यक्ति को-

घबरा मत दोस्त! अब तुम्हें कुछ नहीं होगा! ये मेरा वादा है तुमसे!

दंगाइयों ने प्रेस घूरा उसे जैसे कसाई हलाल करने से पहले बकरे को घूरता है-

कौन है बे तू हिन्दू या मुसलमान?

इंसान!...

...इन्सानियत को तुम जैसे दरिन्दों के हाथों बचाने वाला इन्सान!

धनाक

उछलकर दूर गिरा वह-

अबे, देख क्या रहे हो। ये हमारा दुश्मन है, फाड़ डालो साले को!

ओह! इसका मतलब दंगा भड़काने वाले ये दो-चार ही हैं। बाकी सभी लोग तो धार्मिक उन्माद में इनके पीछे लगे हुए हैं... इनके होश ठिकाने लगाने होंगे!

भीड़ में से सिर्फ दो-चार ही आगे बढ़े-

धांय

धांय

आह

ओह

धड़ाम

चारों को धराशायी करके...

...भीड़ की तरफ पलटा तिरंगा -

इन चन्द घुण्डों, बदमाशों की बातों में आकर आप सब लोग हथियार लेकर सड़कों पर खून बहाने के लिए उतर आये। दंगों की आड़ लेकर इन सब का मकसद तो सिर्फ लूटपाट करना और अपना उल्लू सीधा करना है... लेकिन आप... आप क्या करना चाहते हैं... धर्म की रक्षा! नहीं... मेरे भाइयो नहीं, इस तरह धर्म की रक्षा नहीं होती।

धर्म की रक्षा तो होती है उसकी इज्जत करने व उसे समझने से

कोई धर्म नहीं सिखाता कि उसकी रक्षा के लिए छुरे और तलवार उठाई जाएं, बेगुनाहों का खून बहाया जाये, लाशें बिछाई जाएं... लेकिन... लेकिन आप ये सब करके ना सिर्फ अपने धर्म बल्कि...

...दुनिया के उस सबसे बड़े धर्म का भी अपमान कर रहे हैं जिसे इन्सानियत के नाम से जाना जाता है। हिन्दु और मुसलमान होने से पहले हम इंसान हैं और इन्सान होने के नाते हम सब भाई-भाई हैं और जब हम सब भाई-भाई हैं तो ये जाति, धर्म के नाम पर दंगे क्यों?..

भाई के द्वारा भाई का ही खून बहाने का ये पागलपन क्यों? ... लाशें बिछाने का यह जुनून क्यों? जवाब दो मुझे क्यों... ये सब क्यों?

जवाब देने के लिए किसी की भी गर्दन ऊपर ना उठी -

जबकि अपनी ही झोंक में कहता चला गया तिरंगा -

दोस्तो! इस देश में आज तक जितने भी दंगे हुए उन सब के पीछे किसी ना किसी रूप में राजनीति का जरूर हाथ है। दो समुदाय के साधारण से झगड़े से शुरू हुई बात को बतंगड़ बनाकर दंगे का रूप कैसे देना है, ये राजनीतिज्ञ अच्छी तरह जानते हैं।

वे तो आराम से सुरक्षाकर्मियों से घिरे एयरकंडीशन बंगले में बैठे रहते हैं और हम लोगों के बीच ही मौजूद उनके गुलाम, छुटभैये.. नेता उनके इशारों पर नाचकर अफवाहों और असामाजिक तत्वों के बल पर हममें ऐसा धार्मिक उन्माद भड़काते हैं कि ना चाहते हुए भी हमें उनके साथ हथियार लेकर सड़कों पर उतरना ही पड़ता है। और वह स्थिति दंगे का रूप ले लेती है।

याद रहे दोस्तो! दंगों की आग में भेंट चढ़ने वाला बेगुनाह और अन्जान ही होता है। गुनाहगार और जानकार लोगों का चूंकि यह धन्धा है इसलिए इस आग से बचना खूब जानते हैं।... इसलिए मेरी आप से विनती है कि आप किसी के बहकावे में ना आइये, रोकिए ये दंगा रोकिए ये दरिन्दगी।

भीड़ में से कोई चिल्लाया-

हम रुक जाते हैं, लेकिन बाकी शहर का क्या होगा। वहां भड़का दंगा कैसे रुकेगा?

जब इन्सानियत नामक धर्म के हिन्दू-मुस्लिम नाम के दो भाई मुंह जुट होकर सड़कों पर निकलेंगे तो सागर का उबार और तूफान का जलाल तक रुक जायेगा, तो फिर ये दंगा क्या चीज है।

एक ही स्वर में बोल उठे सभी-

ठीक कहता है तिरंगा, ठीक कहता है?

आओ मेरे भाई, आओ।

फिर क्या था? क्या हिन्दू और क्या मुसलमान सभी एक मानव जंजीर बनाकर सड़कों पर निकल पड़े-

सभी गिले-शिकवे दूर करने के बाद गले मिले हिन्दू-मुसलमान नामक दोनों भाइयों को अब कोई भी ताकत अलग नहीं कर सकती।

लेकिन इस दंगे में जिन बेगुनाहों ने अपनी जानों से हाथ धोए, जिन घायलों के बदन से लहू गिरा उसका हिसाब भी तो होना चाहिए। और साथ ही हिसाब देना चाहिए हवलदार रामनाथ के ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ खून के एक-एक कतरे का और वो हिसाब देगा...

भारतनगर पुलिस स्टेशन -

ना

क

क...कौन हो तुम?

तुम्हारी बरबादी विनाश...

...लेकिन तुम मुझे तिरंगा के नाम से पुकार सकते हो। और मैं तुम्हें और तुम्हारे साथियों को भारतनगर में दंगा भड़काने और कानून के इस घर में कानून के सच्चे रखवाले हवलदार रामनाथ पर किए गए जुल्मों की सजा देने आया हूं।

धड़ाक

आह

इस वार के साथ ही...

...खतरा भांप गए पुस.पुच.ओ. पालकुमार ने रिवॉल्वर निकालकर कई फायर झोंक दिये...

तेरी बेल्ट तो मैंने तोड़ दी है पालकुमार, अब तू वर्दी में नहीं है, अब मैं तुझे मार सकता हूं।

धांय

तू यहां हमें सजा देने नहीं मरने आया है बच्चे!

लेकिन सभी गोलियों को बेकार हो जाना पड़ा अशोक चक्र के सीने से टकराकर–

भारत की मान-मर्यादा का यह निशान भारत के सच्चे सपूत को सिर्फ दुश्मनों से बचाने के लिए ही नहीं...

...तुम जैसे दुश्मनों पर वार करने के भी काम आता है।

धड़ाक

आह

प्रसं.प्रचं.ओ. पालकुमार की इस 'डकार' पर–

...आ पहुंचे उसके सहयोगी–

गोलियों से छलनी कर दो इसे।

गोलियां चलीं और साथ ही चली तिरंगा की ढाल भी–

धड़ाक

आह

आह

तड़ तड़ तड़

अच्छा हुआ, अपने गुनाहों की सजा पाने तुम भी यहीं आ गये, वरना मुझे तुम्हें ढूंढने का कष्ट करना पड़ता।

चारों सिपाहियों की बेल्टें भी कट गईं –

धड़ाक

तुम जैसों ने कानून को अपनी बपौती समझ लिया है। तुम सब वर्दी में छिपे जहरीले सांप हो...

...जो अपने जहरीले दांत कानून की गर्दन में धंसाये...

धड़

वर्षों से कानून का खून पी रहे हो, लेकिन अब तुम्हारे दिन लद चुके हैं।

भड़ाक

उफ! यह तो एकदम तूफान है, इससे बचकर भागना होगा!

पुस: पुच: ओ. पालकुमार भागा तो –

आह!

नहीं मैं तुम्हें इतनी आसानी से नहीं निकल भागने दूंगा, क्योंकि तुम्हें तो अभी ये बताना है कि वह कौन है जिसके इशारे पर कठपुतली बन कर तुमने दंगा भड़काने में उसका सहयोग दिया।

...बोल पालकुमार बोल!

तेरे सवाल का जवाब मैं नहीं कोई और देगा बेवकूफ! और वह होगा...

आईऽऽऽ

वाह हह

०००हब्शी!

अपनी हवालात का दरवाजा खोलकर बाहर निकला हब्शी...

...तिरंगा पर टूट पड़ा-

तेरे हर सवाल का जवाब अब हब्शी देगा बच्चे, और वह जवाब सिर्फ एक शब्द होगा!...

धाड़

...और यह शब्द है मौत!...

...मौत ही मिलेगी तुझे जवाब में!

और वह मौत मिलेगी तुझे इन संगीनों से! जिससे चाहकर भी तू बच नहीं पायेगा क्योंकि ना तो अब तेरे हाथ में तेरी ढाल है और ना ही तेरे पास बचने का कोई रास्ता!

सचमुच मेरे पास बचने के लिए कुछ भी नहीं है!...

...या शायद है! मेरी बेल्ट में खुंसा यह तिरंगा...

...जो आज बिना डण्डे के हवा में लहराकर मुझे इस शैतान से बचायेगा!

ओह!

खिड़की से आती तेज हवा के झोंके से लहराकर वह तिरंगा ठीक हब्शी के चेहरे पर जा चिपका-

और इसी के साथ तिरंगा को बचने का अवसर मिल गया-

याहSSS

खट्ट

और-

धड्ड

फुर्ती से फर्श पर कलाबाजियां खाते हुए उसने ढाल उठाई—

और फिर-

मैं चाहता तो यह डण्डा तेरे दिल में छेद करके आरपार हो सकता था हब्शी, लेकिन मैं अपने हाथों को तेरे गंदे खून से रंगना नहीं चाहता।

खच्चा

आहSSS

डण्डे को हब्शी के जिस्म में चुभाता हुआ चीखा तिरंगा—

अपने आका का नाम बता हब्शी, वरना तेरी जिन्दगी को मौत से भी बदतर बना दूंगा मैं।

नहीSSS

अचानक पीड़ा से चीखते हब्शी ने कर दी वह अप्रत्याशित हरकत-

अरे!

प्रक झटके से उसने डण्डा तिरंगा के हाथ से छीन लिया ...

...और-

ओह!

खच्च

अपने ही हाथों अपना अन्त कर लिया था उस शैतान ने–

ओह! नुकीला डण्डा ठीक दिल में जा घुसा है। इसके जिन्दा होने की अब कोई गुंजाइश नहीं।

लेकिन मुझे अपने सवालों का जवाब मिलेगा हब्शी से नहीं तो प्रुस. प्रुच. ओ. पाल-कुमार से।

प्रुस. प्रुच. ओ. का ध्यान आते ही तिरंगा चिहुंका –

ओह! हब्शी के चक्कर में मैं उसे भूल गया था। कहां गया वह?

अब तिरंगा को कहां मिलना था प्रुस. प्रुच. ओ. पालकुमार–

भाग निकला। इसी के साथ बन्द हो गये उस तक पहुंचने के सभी रास्ते जो सभी को अपने हाथों की कठपुतली बनाए हुए था। मंजिल तक पहुंचने और भी बहुत से रास्ते बन सकते हैं, इसलिए मुझे रुकना नहीं है।

पाप और भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए मुझे तब तक चलते रहना है जब तक मंजिल नहीं मिल जाती, लेकिन वह मंजिल मुझे कब और कहां मिलेगी?

मैं नहीं जानता क्योंकि मेरी मंजिल है एक ऐसा भारत जहां का हर नागरिक तिरंगे के नीचे अमन-चैन और भाई-चारे के साथ रह सके जाने ऐसा कब होगा?

फिर कुछ ही घण्टों बाद तेजी से शान्ति की तरफ लौटते भारतनगर के मुख्य चौराहे पर शान से लहरा रहा था एक तिरंगा जिसके नीचे बंधे पड़े थे भारतनगर पुलिस स्टेशन के भ्रष्ट पुलिसकर्मी–

हम भारतनगर में दंगा भड़काने के दोषी हैं।

प्रिय मित्रो! यह कॉमिक्स आपको कैसी लगी? अपने सुझाव अवश्य लिख भेजें।

आपका मित्र: संजय गुप्ता,
1603 दरीबा कलां, दिल्ली-6

: समाप्त :

हां, जिद्दी ही सही मैं। जिद्दी ही सही तिरंगा। तिरंगे को तो जिद्दी होना ही चाहिए, क्योंकि उसे सदा लहराते रहना है।

राज कॉमिक्स में तिरंगा सीरीज का एक्शन से भरपूर कॉमिक

जिद्दी

संजय गुप्ता की पेशकश

हंटरशार्क्स

शिकार करेंगे लेकिन हंसा-हंसा कर-

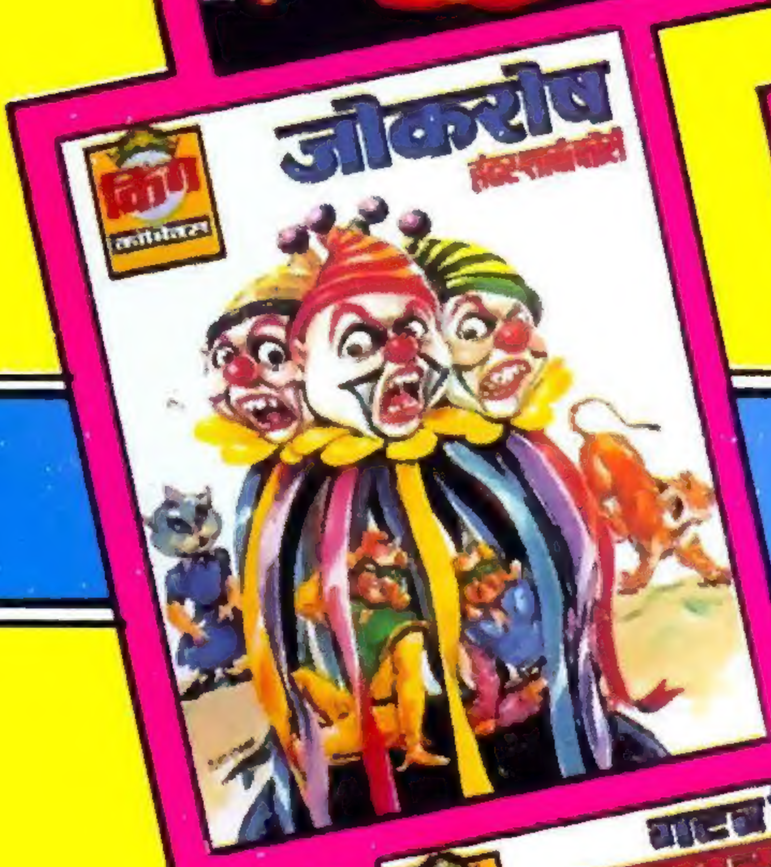

न्यू रिलीज

संस्यासार

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीनः
प्रकाशकः **राजा पॉकेट बुक्स** 330/1 बुराड़ी, दिल्ली-84 फोनः 7221410
दिल्ली में वितरक : **नागराज नावल्टीज** 313 दरीबा कलां, दिल्ली-6 फोनः 3278397